यूपीईएस ने विरासत फेस्टिवल के लिए रीच के साथ मिलाया हाथ

• युवाओं के बीच भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देना है उद्देश्य

भास्कर समाचार सेवा

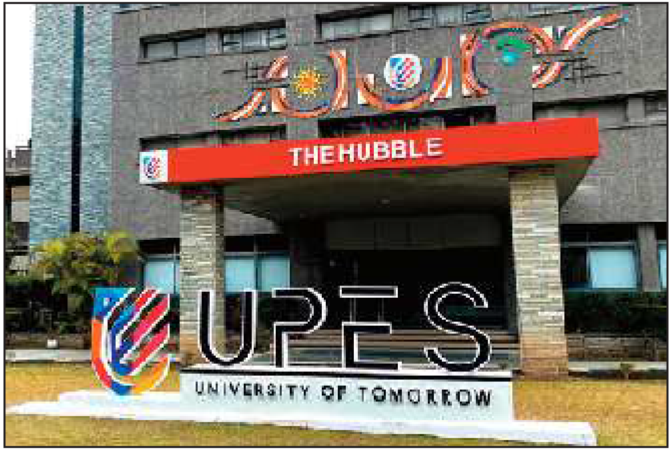

देहरादून। यूपीईएस ने भारतीय कला, संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रीच (रूरल ऑन्त्रप्रेन्योरशिप फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज) की ओर से आयोजित वार्षिक विरासत एवं लोक उत्सव विरासत के साथ पार्टनरशिप की घोषणा की है। इस महत्वपूर्ण भागीदारी के चलते, यूपीईएस के 16,000 से अधिक छात्र, फैकल्टी और स्टाफ, उच्च शिक्षारत युवाओं के बीच सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रसार के लिए एकजुट होकर प्रयास करेंगे।

यूनीवर्सटी के अत्याधुनिक एंफीथियेटर, मल्टी एक्टिविटी सेंटर (एमएसी) तथा कैंपस की अन्य सुविधाओं को पूरे साल भर कला, शिल्प, संस्कृति और पर्यावरण पर केंद्रित आयोजनों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। भारतीय सभ्यता के पालनहार के रूप में हिमालय का काफी सांस्कृतिक महत्व है और यह पहल भारत समेत वैश्विक पटल पर भी इस समृद्ध विरासत को प्रोत्साहित करेगी। सांस्कृतिक प्रोत्साहन के अलावा, यह कार्यक्रम युवाओं को कई बड़ी वैश्विक चुनौतियों, जिनमें जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, सामुदायिक मसले, वनाग्नि, और प्राकृतिक आपदाएं भी शामिल हैं, से भी अवगत कराएगा। ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर यूपीईएस का हिमालयन इंस्टीट्यूट फॉर लीडरशिप एंड लर्निंग भी कार्यरत है। इन तमाम गहन अनुभवों के चलते, यह पहल अगली पीढ़ी को अधिक सजग एवं जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनाने में योगदान करेगी, जो हमारी दुनिया की जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार है। वाइस चांसलर यूपीईएस डॉ राम शर्मा ने इस पार्टनरशिप के बारे में कहा कि विरासत के साथ यह गठबंधन, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने की यूपीईएस की दृढ़ प्रतिबद्धता दर्शाता है। हमारा मानना है कि इस फेस्टिवल को समर्थन देकर हम न सिर्फ पारंपरिक कलाओं को बढ़ावा देंगे बल्कि अपने छात्रों तथा फैकल्टी को भी अपने देश के सांस्कृतिक परिदृश्य से जुड़ने तथा इसके लिए योगदान करने का अवसर दे रहे हैं। आर के सिंह एक्स-ईडी (एचआर) ओएनजीसी, तथा संस्थापक रीच विरासतने कहा कि यह समझौता ज्ञापन भारतीय युवाओं के लिए संपूर्ण तथा मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रेरित है। यूपीईएस तथा रीच के एकजुट होने से ऐसी कलात्मक और सौंदर्यपरक संवेदनाओं को संगम होगा जो देश के सांस्कृतिक परिदृश्य को और समृद्ध बनाएंगी। विरासत तो केवल शुरुआत है, मुझे पूरा भरोसा है कि आने वाले समय में हम और भी कई उल्लेखनीय उपलब्धियों को साकार कर सकेंगे। विरासत 15 दिवसीय फेस्टिवल है जो इस साल 15-29 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। अपनी स्थापना के बाद से, पिछले तीन दशकों में यह ग्रामीण कलाओं को गुमनामी और उपेक्षा के घने कोहरे से बाहर लाने वाली महत्वपूर्ण पहल साबित हुई है। फेस्टिवल ने कई शास्त्रीय एवं समकालीन कलाओं के विकास में इनके महत्व को प्रदर्शित करते हुए इन परंपराओं में नई जान डाली है। इसके विविध आकर्षणों में एक क्राफ्ट विलेज, क्यूज़िन स्टॉल्स, आर्ट फेयर, लोक संगीत के अलावा बॉलीवुड-शैली की प्रस्तुतियां, विरासत की सैर समेत और बहुत कुछ शामिल है। फेस्टिवल का प्रत्येक पहलु, जिसमें कला प्रदर्शनियां, संगीत प्रस्तुतियां, खानपान, और विरासत की सैर शामिल है, भारतीय धरोहर से जुड़े पारंपरिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती हैं। पिछले वर्षों में, फेस्टिवल के मंच पर पं. भीमसेन जोशी, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, जगजीत सिंह, राजन एवं साजन मिश्रा, सुरेश वाडकर, तथा वडाली बंधुओं समेत अन्य कई दिग्गज कलाकारों की शानदार प्रस्तुतियां आयोजित की जा चुकी हैं।